Pali Language and Buddhism

Pratima Kumari
Research Scholar (Shodharthi), Jammu University
Supervisor: Dr. Vivek Sharma, Department of Buddhist Studies
Email: pratimarnapp@gmail.com

Abstract

Pali is the original medium of expression for Buddhism. In the 6th century BCE, Gautama Buddha used Pali to convey his teachings to the common people, and the Tripitaka, the fundamental Buddhist scripture, is preserved in this language. The characteristics of the Pali language, its literary form, and its role in the development and spread of Buddhism have been significant since ancient times. Pali is not only a religious language but also a valuable repository of ancient Indian history, culture, and philosophy. It is an important source for understanding our history. This research paper will enrich the Indian intellectual tradition and provide a significant academic contribution to the fields of Buddhist studies, history, philosophy, and cultural research.

Keywords: Pali language, Buddhism, Tripitaka, Vinaya Pitaka, Sutta Pitaka, Abhidhamma Pitaka, Sangiti, monastic order, Dhamma, Dipavamsa, Mahavamsa, Culavamsa, Buddhaghosuppatti, Magadhi, Sri Lanka.

पालि भाषा और बौद्ध धर्म

प्रतिमा कुमारी
शोधार्थी, जम्मू विश्वविद्यालय
मार्गदर्शक: डॉ. विवेक शर्मा, बौद्ध अध्ययन विभाग

सारांश :-

पालि भाषा बौद्ध धर्म का मूल अभिव्यक्ति माध्यम है। ६ शताब्दी में गौतम बुद्ध ने अपने उपदेश को आम लोगों तक पहुंचने के लिए जिस भाषा का उपयोग किया वह पालि भाषा थी जैसे कि त्रिपिटक मूल बौद्ध ग्रंथ इसी भाषा में सुरक्षित किया गया है । पालि भाषा की विशेषताओं को उसके साहित्यिक स्वरूप तथा बौद्ध धर्म के विकास एवं प्रचार प्रसार में उसकी भूमिका प्राचीन काल से ही महत्त्वपूर्ण रही है। पालि केवल एक धार्मिक भाषा नहीं है, बल्कि प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं दर्शन की एक अमूल्य धरोहर है। पालि भाषा हमारे इतिहास को समझने का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है ।अंततः यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा को समृद्ध करने के साथ-साथ बौद्ध अध्ययन, इतिहास, दर्शन और सांस्कृतिक शोध के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण अकादमिक योगदान प्रदान करेगा ,अंतः इस शोध पत्र में इन सभी बिंदुओं की विस्तार से चर्चा की जाएगी।

मुख्य शब्द :- पालि भाषा , बौद्ध धर्म, त्रिपिटक, विनयपिटक, सुत्तपिटक , अभिधम्मपिटक, संगीति , भिक्षु संघ , धम्म , दीपवंस, महावंस, चूलवंस , बुद्धघोसुप्पति , मगधी, श्रीलंका।

प्रस्तावना :--

प्राचीन कालीन भारतीय आर्यभाषाओं में पालि भाषा को कालक्रम एवं साहित्य की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। कालक्रम की दृष्टि से पालि भाषा वैदिक संस्कृति तथा संस्कृत काल दोनों को स्पर्श करती है। खुद्दकनिकाय के ग्रन्थ 'सुत्तनिपात' में ऋग्वैदिक भाषा के प्रदेशिक प्रयोग का वर्णन किया गया हैं तथा उसकी भाषागत विशेषताओं के साथ-साथ पालि की विविधरूपता भी यथास्थिति प्राप्त होती है। बौद्ध धर्म का मूल ग्रन्थ 'त्रिपिटक' इसी पालि भाषा में संकलित किया गया है, जिससे पालि भाषा का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक महत्व सिद्ध होता है।

परिणामस्वरूप, वैदिक एवं लौकिक संस्कृत भाषा और साहित्य के उपरान्त यदि पालि भाषा एवं उसके साहित्य का अध्ययन न किया जाए, तो भारत की आधुनिक भाषाओं तथा भारतीय संस्कृति का स्वरूप पूर्ण रूप से प्रस्तुत नहीं किया जा सकता। अंतः आधुनिक भाषाओं तथा भारतीय संस्कृति के विकासमान स्वरूप को समझने के लिए पालि भाषा एवं उसके साहित्य का अध्ययन केवल आवश्यक ही नहीं, बल्कि अनिवार्य है।

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में प्राचीन कौशल जनपद के प्रधान नगर कपिलवस्तु में शाक्य लोगों के गणराज्य में सिद्धार्थ गौतम का जन्म हुआ। गौतम बुद्ध ने बौद्ध धर्म की स्थापना की। बौद्ध धर्म मानवता को करुणा, अहिंसा और मध्यम मार्ग का संदेश देता है। गौतम बुद्ध ने अपने उपदेशों को सर्वसाधारण तक पहुँचाने के लिए उन्होंने उस समय की जनसाधारण की बोली में उपदेश दिए। उस समय कौशल तथा मगध प्रदेश में पालि भाषा बोली जाती थी, जिसका नाम उस काल में मागधी (मागही) भाषा था, जिसे आज पालि के नाम से जाना जाता है।बुद्ध के वचन और उपदेशों के प्रतिपादित ग्रन्थों को 'पिटक' कहा जाता है, जिनमें बुद्ध के वचनों का संकलन किया गया हैं जो इस प्रकार है — सुत्तपिटक, विनयपिटक एवं अभिधम्मपिटक।

चौथी–पाँचवीं शताब्दी में आचार्य बुद्धघोष सिंहल देश (वर्तमान श्रीलंका) गए और उन्होंने बुद्धवचनों का सिंहली भाषा से पालि भाषा में अनुवाद किया, जो 'अट्ठकथा' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उन्होंने अपने अनुवाद में विभिन्न उदाहरणों के प्रसंग में 'अत्थमेंथ पालि' अथवा 'पालियं बुत्तं' शब्दों का प्रयोग किया है , जिसका अर्थ है— "पालि में कहा गया है।"

अतः बुद्धघोष ने 'पालियं' शब्द से मूल बुद्धवचन (त्रिपिटक) तथा 'अट्ठकथा' शब्द से सिंहली अट्ठकथाओं को निरूपित किया है। यहाँ 'पालि' शब्द भाषावाचक न होकर मूल ग्रन्थ त्रिपिटक का वाचक है। भदन्त आनन्द कौसल्यायन ने 'जातक' (प्रथम भाग) की 'वस्तुकथा' में ठीक ही लिखा है—

" पालि वास्तव में किसी भाषा का नाम नहीं रहा है। भाषा का नाम तो मागधी रहा है।

पालि केवल मूलवचन का पर्यायवाची शब्द रहा है।"

इसके अतिरिक्त, बारहवीं शताब्दी के वैयाकरण मोग्गल्लान ने पालि भाषा का व्याकरण लिखा, जिसका प्रथम श्लोक इस प्रकार है—

सिद्धमिद्धगुणं साधु नमस्सित्वा तथागतं।

सधम्मसङ्गं भासिस्सं मागधं सद्दलक्खणं।।

यहाँ उन्होंने 'मागधसद्दलक्षण' कहा है, न कि पालि शब्दलक्षण या पालि व्याकरण। इससे सिद्ध होता है कि बारहवीं शताब्दी तक पालि भाषा के लिए 'मागधी' शब्द ही प्रयुक्त होता था। अतः यह स्पष्ट होता है कि चौथी शताब्दी से चौदहवीं शताब्दी तक 'पालि' शब्द भाषा-विशेष के अर्थ में नहीं, बल्कि मूल बुद्धवचन (त्रिपिटक) के अर्थ में प्रचलित था।आज भी श्रीलंका, म्यांमार, थाईलैंड आदि देशों में पालि भाषा को धार्मिक साहित्य की 'अधिकृत भाषा' के रूप में मान्यता प्राप्त है।

पालि शब्द का मूल अर्थ एवं विकास

आज 'पालि' शब्द का प्रयोग उस भाषा के लिए किया जाता है, जिसमें बुद्धवचन त्रिपिटक संकलित है। पालि से तात्पर्य उस भाषा से है, जिसमें त्रिपिटक, श्रीलंका तथा सुदूर भारत के पवित्र ग्रंथ और उनके सहायक साहित्य की रचना हुई है। यद्यपि 'पालि' शब्द का मूल अर्थ केवल 'ग्रंथ' अथवा 'पवित्र ग्रंथ' है, परन्तु जब इस शब्द का प्रयोग भाषा के अर्थ में किया जाता है, तब यह केवल 'पालि भाषा' का एक सुविधाजनक संक्षिप्त रूप मात्र बन जाता है।

उद्भव एवं विकास

ईसा पूर्व छठी शताब्दी में भगवान गौतम बुद्ध द्वारा प्राप्त सम्यक् संबोधि ही पालि साहित्य का मूल आधार बनी। गौतम बुद्ध ने अपने उपदेशों का माध्यम रूप लोकभाषा में स्वीकार किया। तथागत के सभी उपदेश उस समय मौखिक रूप में थे। बुद्ध के समय धर्मोपदेशों को स्मृतिबद्ध रखने की परम्परा थी। बुद्धवचनों को धारण करने वाले अनेक भिक्षु थे, जो तथागत के उपदेशों को स्मृति द्वारा कण्ठस्थ करते थे।

सम्बोधि प्राप्ति के पश्चात् गौतम बुद्ध ने लगभग 45 वर्षों के दीर्घकाल में जो धर्म-प्रवर्तन किया, वह इतना विशाल और बहुआयामी था कि बिना स्थूल अथवा सूक्ष्म वर्गीकरण के उसके आदि और अन्त को समझना कठिन था। अतः गौतम बुद्ध के परिनिर्वाण के पश्चात् अनेक बौद्ध संगीतियाँ आयोजित की गईं। इन संगीतियों में गौतम बुद्ध द्वारा दिए गए समस्त उपदेशों को संकलित कर त्रिपिटक का रूप प्रदान किया गया।

पं० राहुल सांकृत्यायन के मतानुसार 'त्रिपिटक' का अर्थ तीन पिटारियाँ है। इसी कारण से यह संग्रह 'त्रिपिटक' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। त्रिपिटक में गौतम बुद्ध द्वारा दिए गए उपदेशों का वर्गीकरण तीन भागों में किया गया है, जो निम्नलिखित हैं—सुत्तपिटक, विनयपिटक तथा अभिधम्मपिटक।

सुत्तपिटक त्रिपिटक का सबसे विशाल ग्रंथ है, जिसमें विद्वानों तथा सामान्य समाज दोनों के लिए धर्म से संबंधित उपदेशों का संकलन किया गया है। द्वितीय स्थान पर विनयपिटक है, जिसमें पाँच ग्रंथ सम्मिलित हैं। इसमें भिक्षु एवं भिक्षुणी संघ के लिए पालन योग्य आचार-नियमों का विस्तार से वर्णन किया गया है। अंतिम अभिधम्मपिटक है, जिसमें विद्वानों और साधकों के लिए गूढ़ दार्शनिक सिद्धांतों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

बौद्ध धर्म की उत्पत्ति

बौद्ध धर्म की स्थापना ऐतिहासिक काल में गौतम बुद्ध ने की। बौद्धों का विश्वास है कि शाक्यमुनि वर्तमान युग (कल्प) के अंतिम पूर्ण रूप से प्रबुद्ध बुद्ध थे। उनके बाद भविष्य में मैत्रेय बुद्ध (पालि: मैत्तय) का आगमन होगा। अनेक जन्मों में परमिताओं का अभ्यास करते हुए उन्होंने ज्ञान की प्राप्ति की। उनसे पहले 23 बुद्धों ने विभिन्न युगों में इस धर्म का प्रचार किया था। शाक्यमुनि के जीवन की घटनाओं से परिचित होना ही इस धर्म की विशेषताओं को समझने के लिए आवश्यक है।

प्राचीन कोशल जनपद में शुद्धोधन, सूर्यवंशी राजा थे तथा वे शाक्य गणतंत्र के प्रमुख शासक थे। गौतम बुद्ध की माता महामाया देवी, कपिलवस्तु से अपने मायके देवदह जा रही थीं। तभी मार्ग में लुंबिनी नामक उद्यान में वैशाख पूर्णिमा के दिन बुद्ध का जन्म हुआ। पुत्र जन्म के सात दिन बाद महामाया देवी का देहांत हो गया। अतः उनका पालन-पोषण उनकी विमाता रानी महाप्रजापति गौतमी ने किया। बचपन में उनका नाम सिद्धार्थ रखा गया।

महाभिनिष्क्रमण :—सिद्धार्थ ने उस समय की परंपरा के अनुसार समस्त विद्याओं में शिक्षा प्राप्त की और उनमें पारंगत हुए। उन्होंने अपने प्रारंभिक उनतीस वर्ष सांसारिक जीवन में बिताए। इसी दौरान उनका विवाह देवदह की राजकुमारी यशोधरा देवी से हुआ। गौतम बुद्ध के जन्म के समय असित नामक ज्योतिषी द्वारा की गई वैराग्य-संपन्न होने की भविष्यवाणी कि थी जो सत्य सिद्ध हुई। राजसी भोग-विलास में रहने पर भी उनकी चित्तवृत्ति वैराग्य की ओर झुकी रही। जब उन्होंने अपने भ्रमण के दौरान एक वृद्ध पुरुष, रोगी, मृत शरीर तथा सन्यासी को देखा, तब उनके मन में संसार की क्षणभंगुरता और अधिक स्पष्ट हो गई। अतः 29 वर्ष की आयु में पत्नी, नवजात शिशु और विशाल साम्राज्य का त्याग कर वे ज्ञान की खोज में वन की ओर निकल पड़े। उनका यह गृहत्याग महाभिनिष्क्रमण कहलाता है।

धर्मचक्रप्रवर्तन :—इसके पश्चात वे कई वर्षों तक कोशल और मगध के वनों में उपयुक्त गुरु की खोज में भ्रमण करते रहे। अंततः वे आलार कालाम से मिले और उनसे आध्यात्मिक साधना की शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने छह वर्षों तक कठोर तपस्या की, जिससे उनका शरीर अत्यंत क्षीण हो गया, किंतु उन्हें तब भी सम्बोधि की प्राप्ति नहीं हुई।

तब उन्होंने इस मार्ग को अनुपयुक्त मानकर बोधगया में उरुवेला नामक स्थान पर ध्यान किया और वहीं उन्हें आर्य सत्यों का ज्ञान प्राप्त हुआ। उसी दिन से वे बुद्ध कहलाए। उस समय उनकी आयु 35 वर्ष थी। यह घटना भी वैशाख पूर्णिमा को ही घटी।

ज्ञान प्राप्ति के पश्चात गौतम बुद्ध ने काशी के समीप मृगदाव (सारनाथ) में कौंडिन्य, वप्पा आदि पंचवर्गीय भिक्षुओं को उपदेश देकर धर्मचक्रप्रवर्तन किया। इसी के साथ संघ और धर्म की स्थापना हुई। भिक्षुओं की दिनचर्या के लिए उन्होंने विनय का उपदेश दिया, जिसे बाद में विनयपिटक के नाम से संकलित किया गया।

निर्वाण :— उस समय पंडितों की भाषा संस्कृत अत्यंत कठिन थी, जिसे जनसाधारण समझ नहीं पाता था। इसलिए बुद्ध ने संस्कृत का परित्याग कर पालि भाषा में अपने उपदेश दिए, जिससे वे सीधे जनमानस तक पहुँच सकें। धर्म की व्याख्या में उन्होंने कथाओं और रोचक दृष्टांतों का सहारा लिया। परिणामस्वरूप बुद्ध के जीवनकाल में ही उनका धर्म दूर-दूर तक फैल गया।

अंततः 483 ई०पू०, वैशाख पूर्णिमा के दिन 80 वर्ष की आयु में मल्ल गणतंत्र की राजधानी कुशीनगर में गौतम बुद्ध ने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया। उनका अंतिम उपदेश था—"अप्प दीपो भव " अर्थात् अपने लिए स्वयं दीपक बनो और उत्साहपूर्वक मुक्ति के लिए प्रयत्न करो।

बौद्ध धर्म में पालि की भूमिका

गौतम बुद्ध के निर्वाण के पश्चात् बौद्ध धर्म के मूल सिद्धांतों को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से उनके प्रमुख शिष्यों द्वारा मगध राज्य की राजधानी राजगृह में प्रथम बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया। क्योंकि बुद्ध के उपदेश उस समय तक मौखिक परंपरा में प्रचलित थे, अतः गौतम बुद्ध के निर्वाण के पश्चात् उनके उपदेशों को लिखित रूप में सुरक्षित करने हेतु विभिन्न बौद्ध संगीतिकाओं का आयोजन किया गया। इन्हीं संगीतिकाओं के माध्यम से विनयपिटक, सुत्तपिटक तथा अभिधम्मपिटक का संकलन हुआ। ये सभी ग्रंथ पालि भाषा में लिखे गए हैं।

विनयपिटक :–

विनयपिटक में भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए दैनिक जीवन में पालन किए जाने वाले नियमों एवं आचार-संहिताओं का उपदेश दिया गया है। यह पिटक बुद्धकालीन भारतीय समाज की सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति का स्पष्ट दर्पण प्रस्तुत करता है।

विनयपिटक के अंतर्गत तीन ग्रंथ संग्रहीत हैं—

• सुत्तविभंग :– इसके दो भाग हैं—पाराजिक तथा पाचित्तिय।

• खन्धक :– यह दो भागों में विभक्त है—महावग्ग और चुल्लवग्ग।

• परिवार

सुत्तपिटक :–

जिस प्रकार विनयपिटक का मुख्य उद्देश्य संघ का शासन है, उसी प्रकार सुत्तपिटक का प्रधान उद्देश्य 'धर्म' का प्रतिपादन है। गौतम बुद्ध ने अपने जीवनकाल में विभिन्न अवसरों पर जिन धर्मोपदेशों का प्रवचन किया था, उन्हीं शिक्षाओं का संकलन सुत्तपिटक में किया गया है। इस पिटक में भारतीय संस्कृति तथा तत्कालीन इतिहास से संबंधित सामग्री भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। सुत्तपिटक में गद्य और पद्य—दोनों प्रकार की रचनाएँ मिलती हैं।

सुत्तपिटक को पाँच निकायों में विभाजित किया गया है—

दीघनिकाय , मज्झिमनिकाय , संयुत्तनिकाय, अंगुत्तरनिकाय, खुद्दकनिकाय ।

खुद्दकनिकाय :–

खुद्दकनिकाय के अंतर्गत कुल पंद्रह छोटे-बड़े ग्रंथ सम्मिलित हैं—

खुद्दकपाठ, धम्मपद, उदान, इतिवुत्तक, सुत्तनिपात, विमानवत्थु, पेतवत्थु, थेरगाथा, थेरीगाथा, जातक, निद्देस, पटिसंभिदामग्ग, अपदान, बुद्धवंस तथा चरियापिटक।

अभिधम्मपिटक :–

अभिधम्मपिटक की रचना विनयपिटक और सुत्तपिटक की अपेक्षा बाद में हुई। सुत्तपिटक में जो धर्म उपदेशात्मक रूप में और विनयपिटक में जो संयमात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है, वही अभिधम्मपिटक में तत्त्वात्मक एवं दार्शनिक रूप में विवेचित है। धर्म का विस्तारपूर्वक विश्लेषण ही अभिधम्म कहलाता है।

अभिधम्मपिटक में सात ग्रंथ सम्मिलित हैं, जिन्हें प्रकरण ग्रंथ कहा जाता है। इन ग्रंथों में बौद्ध तत्त्व-दर्शन का विस्तृत विवेचन मिलता है। यह पिटक बौद्ध दर्शन के अध्ययनकर्ताओं के लिए अत्यंत उपयोगी माना जाता है।

अभिधम्मपिटक के सात ग्रंथ हैं—

धम्मसंगणि, विभंग, धातुकथा, पुग्गलपञ्ञत्ति, कथावत्थु, यमक तथा पट्ठान।

अट्ठकथा साहित्य

मूल त्रिपिटक साहित्य के अतिरिक्त पालि भाषा में त्रिपिटकों पर अट्ठकथाएँ तथा उन पर लिखी गई टीकाएँ भी उपलब्ध हैं। इन अट्ठकथाओं की रचना चौथी–पाँचवीं शताब्दी ईस्वी में बौद्ध आचार्यों द्वारा की गई, जिनमें प्रमुख रूप से बुद्धघोष और बुद्धदत्त का

नाम उल्लेखनीय है। इन ग्रंथों के माध्यम से हमें विभिन्न कालखंडों तथा विश्व के विभिन्न देशों में बौद्ध धर्म के इतिहास और भारत से उसके संबंधों की महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

बुद्धघोष द्वारा रचित अट्ठकथाएँ विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण हैं। उन्होंने सिंहल (श्रीलंका) में जाकर सिंहली भाषा में उपलब्ध अट्ठकथाओं का मगधी (पालि) भाषा में अनुवाद किया। ये अट्ठकथाएँ अपने समय के ऐतिहासिक कालखंड को समझने के लिए अत्यंत उपयोगी स्रोत हैं। इन पर लिखी गई टीकाओं के माध्यम से उस समय के श्रीलंका के भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक शासन-तंत्र का भी विस्तृत ज्ञान प्राप्त होता है। इस प्रकार पालि साहित्य उत्तरकालीन विकास के इतिहास की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है।

वंस साहित्य

वंस साहित्य पालि भाषा की एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। अन्य भारतीय आर्य भाषाओं में इस प्रकार का साहित्य प्रायः नहीं मिलता, जबकि पालि में वंस साहित्य की एक समृद्ध परंपरा उपलब्ध है। इसके अंतर्गत निम्नलिखित ग्रंथ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं—

1. दीपवंस :—

दीपवंस की रचना चौथी–पाँचवीं शताब्दी ईस्वी में मानी जाती है। यह ग्रंथ इस तथ्य की पुष्टि करता है कि मौर्य सम्राट अशोक ने भारत के बाहर बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु धर्मप्रचारकों को भेजा था। इसमें उनके नामों का भी उल्लेख मिलता है। साथ ही यह अशोक के 'धम्म-विजय' के प्रयासों का वर्णन करता है। दीपवंस में श्रीलंका द्वीप का इतिहास प्रारंभिक काल से लेकर राजा महासेन के समय तक प्रस्तुत किया गया है। यह ग्रंथ बुद्धघोष से पूर्व का माना जाता है।

2. महावंस :—

महावंस बौद्धों का एक सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ है, जिसकी रचना पाँचवीं–छठी शताब्दी ईस्वी में की गई थी। इसमें मगध के राजाओं की क्रमबद्ध सूची उपलब्ध होती है। महावंस की रचना पालि भाषा में की गई है। सम्राट अशोक तथा श्रीलंका में बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के संबंध में विस्तृत जानकारी हमें मुख्यतः इसी ग्रंथ से प्राप्त होती है।

3.चूलवंस :—

चूलवंस को महावंस का विकसित अंश माना जाता है। इसमें राजा महासेन के शासनकाल के अंतिम वर्षों से लेकर 1935 ईस्वी तक के श्रीलंका का क्रमबद्ध ऐतिहासिक विवरण मिलता है।

4. बुद्धघोसुप्पत्ति :—

इस ग्रंथ की रचना 14वीं शताब्दी में भिक्षु महामंगल द्वारा बुद्धघोष की जीवनी के रूप में की गई थी। इसमें बुद्धघोष के जीवन-वृत्त, उनके श्रीलंका-गमन, त्रिपिटक पर टीकाएँ लिखने तथा बौद्ध धर्म के प्रसार में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका का वर्णन मिलता है। यह ग्रंथ थेरवाद बौद्ध धर्म के लिए अत्यंत अमूल्य माना जाता है और बुद्धघोष के श्रीलंका प्रवास के समय के सामाजिक-धार्मिक परिदृश्य को समझने में सहायक है।

इनके अतिरिक्त सद्धम्मसंग्रह, महाबोधिवंस, थूपवंस, अत्तनगलुविहारवंस, दाठावंस, जिनकालमालिनी, छकेसधातुवंस, नलातधातुवंस, सन्देसकथा, गन्धवंस, संगीतिवंस, सासनवंस, सासनवंसदीप आदि अनेक रचनाएँ उपलब्ध हैं। इनका महत्त्व मुख्यतः धार्मिक है, साहित्यिक अपेक्षाकृत कम।

निष्कर्ष :—

पालि भाषा भारतीय सभ्यता और बौद्ध धर्म के इतिहास की एक जीवित कड़ी है। इसका महत्त्व केवल एक धार्मिक भाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह प्राचीन भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक इतिहास को समझने का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत

भी है। पालि ग्रंथों—विशेषतः त्रिपिटक, महावंस, दीपवंस, जातक कथाएँ और धम्मपद—में निहित सामग्री से उस युग की सामाजिक संरचना, आर्थिक व्यवस्था, जनजीवन, धर्म-नीति और राज्यसत्ता की स्पष्ट झलक मिलती है।

उदाहरणस्वरूप, जातक कथाओं में बुद्धकालीन व्यापार, कृषि, नगर-व्यवस्था, शिक्षा तथा लोकजीवन का विस्तृत चित्रण प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त मौर्यकालीन और उत्तर-मौर्यकालीन भारत के वास्तविक इतिहास को समझने में भी पालि साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पालि भाषा को लोकप्रचार की भाषा के रूप में अपनाया गया, जिससे बौद्ध धर्म का संदेश सीधे जनमानस तक पहुँच सका।

इस प्रकार पालि ने न केवल बौद्ध धर्म के प्रसार में, बल्कि भारतीय उपमहाद्वीप के सांस्कृतिक एकीकरण में भी ऐतिहासिक भूमिका निभाई। श्रीलंका तथा दक्षिण-पूर्व एशिया में पालि साहित्य के संरक्षण ने भारत और इन देशों के बीच धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संबंधों को जीवित रखा है। आज भी पालि भाषा के अध्ययन से प्राचीन भारत और बौद्ध धर्म के विकासक्रम का वास्तविक चित्र प्रस्तुत होता है। अतः पालि भाषा का महत्त्व साहित्यिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक—तीनों स्तरों पर समान रूप से स्वीकार्य है। पालि भाषा ने न केवल बौद्ध धर्म को विश्वव्यापी बनाया, बल्कि भारतीय इतिहास की आत्मा को भी अमर शब्दों में अभिव्यक्त किया है।

References/संदर्भ ग्रन्थ सूची :--

1. A.K. Warder, Introduction to Pali, Pali Text Society, London, प्रथम प्रकाशन 1963, पुनः संस्करण 1991, 2010.
2. Charles Duroiselle, A Practical Grammar of the Pali Language, Rangoon University Press, 1906.
3. B.C. Law, Pali Language and Literature, University of Calcutta, 1930.
4. T.W. Rhys Davids, Pali-English Dictionary, Pali Text Society, London, 1921–1925.
5. Rahul Sankrityayan, Pali Sahitya Ka Itihas, Hindi Granth Ratnakar, Lucknow, 1940.
6. Buddhaghosa, Visuddhimagga, Pali Text Society Edition, London, 1920.
7. Wilhelm Geiger (Ed.), Mahavamsa, Pali Text Society, London, 1908.
8. Wilhelm Geiger (Ed.), Culavamsa, Pali Text Society, London, 1925–1927.
9. I.B. Horner (Trans.), The Book of Discipline (Vinaya-Pitaka), 5 Volumes, Pali Text Society, London, 1938–1966.
10. Bhikkhu Bodhi, The Connected Discourses of the Buddha (Samyutta Nikaya), Wisdom Publications, Boston, 2000.
11. Bhikkhu Bodhi, The Numerical Discourses of the Buddha (Anguttara Nikaya), Wisdom Publications, Boston, 2012.
12. E.J. Thomas, Early Buddhist Scriptures, Kegan Paul, London, 1913.
13. Walpola Rahula, What the Buddha Taught, Oxford University Press, 1959.
14. A.L. Basham, The Wonder That Was India – Buddhism Chapter, Rupa & Co., New Delhi, 1954.
15. G.P. Malalasekera, A Dictionary of Pali Proper Names, Pali Text Society, London, 1937.
16. Bhante Anand Kausalyayan, Tripitaka Saar, Buddha Bhoomi Prakashan, Nagpur, 1997.

17. Dr. Ramanand Sharma, Pali Bhasha aur Sahitya, Delhi, 2004.
18. Walpola Rahula, Buddhism in Sri Lanka, Colombo, 1966.
19. Gooneratne, History of Buddhism in Ceylon, Colombo, 1980.
20. Nyanaponika Thera, Abhidhamma Studies, Buddhist Publication Society, Sri Lanka, 1985.
21. Zumbare, V. B. (2021). पालि भाषा एवं साहित्य के विकास में अनुवाद की भूमिका. Bodhi Path, 20(1), 33-39.
22. Chandra, P. (2019). बुद्ध की सकाय निरुतिया: छन्दस बनाम मागधी. Bodhi Path, 16, 34-40.